Padma Shri



Prof. (Dr.) Lakshmi Nandan Bora

Prof. (Dr.) Lakshmi Nandan Bora, presently Editor of the widely circulated prestigious Assamese Literary monthly 'GORIYOSHI' is not only the celebrated litterateur in India and a household name in Assam, but also a notable scientist with enough of contributions in Climatology and Agricultural Meteorology.

2. Born in March 1, 1932, Dr. Bora received his B.Sc. degree with honours in Physics from Gauhati University (1952) and M.Sc. degree in Physics from Calcutta University (1954). Later, while working as Associate Professor in the Assam Agricultural University, he obtained his Ph.D. degree in Meteorology from Andhra University, Waltair, A.P. (1977), and afterswards he came to be known as a climatologist. He was Professor of Agrometeorology in Assam Agricultural University, Jorhat till 1992 and Visiting Professor of Climatology in Johannes Gutenberg University, Mainz, Germany (1989). He was also director of an Indo-German Research Project on 'Climate and Productivity of Tea in Assam, India' (1989-1992).

3. Dr. Bora has made an enormous contribution in literature. The total number of his publications is 80. He authored 31 novels, 27 anthologies of short stories, 2 plays, 3 travelogues, 6 popular science books, 1 voluminous autobiography, 2 biological sketches in Assamese, and 1 text book in English on Environment. One of his novels is translated and published in all the Indian major languages by National Book Trust, and Sahitya Akademy published his award-winning novel Patal Bhairavi in Hindi. Bengali, Maithili and Oria. Saraswati Samman winning novel Kayakalpa is available in English translation. His five novels based on the lives of Eve great Vaishnavite saints of Assam have been bestsellers, and three of them have been acclaimed as classics. Some of his novels and short stories have been adapted for movies and T.V. serials.

4. Dr. Bora had held a number of important positions such as President, Asom Sahitya Sabha, Chairman, Pollution Control Board, Assam, Vice-President, Assam Science Society, and Convener and Executive Member of Sahitya Akademy. Dr. Bora's journalistic experience is no less. He was upper Assam correspondent of the Economic Times, freelance journalist for two decades, editor of two Assamese Weeklies and now Editor of 'GORIYASHI' since 2009.

5. Dr. Bora is recipient of a lot of literary awards. The notable ones are Saraswati Samman (2008) of K. K. Birla Foundation, Sahitya Akademy Award (1988), i) Rachana-Samagra Award of Bharatiya Bhasa Parishad (2013),Assam Valley Literary Award for total contribution by Magor Educational Trust (2004), Assam Publication Board Award for Lifetime Achievement (2012) and Assam Governments Madhabdeva Award (2010).



प्रो.(डॉ.) लक्ष्मी नन्दन बरा

प्रो. (डॉ.) लक्ष्मी नन्दन बरा, इस समय प्रतिष्ठित और व्यापक रूप में पढ़ी जाने वाली असमी साहित्यिक मासिक पत्रिका 'गोरियोशी' के संपादक हैं। आप न केवल भारत में विख्यात साहित्यकार और असम में घर-घर लोकप्रिय हैं बल्कि क्लाइमैटोलॉजी और एग्रीकल्चरल मेटिरियालॉजी में अपने पर्याप्त योगदान से विख्यात वैज्ञानिक भी हैं।

2. आपका जन्म मार्च 01, 1932 को हुआ। आपने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से वर्ष, 1952 में भौतिक विज्ञान में ऑनर्स के साथ बी.एससी. की डिग्री और कोलकाता विश्वविद्यालय से वर्ष, 1954 में भौतिक विज्ञान में एम.एससी. की डिग्री प्राप्त की। बाद में असम कृषि विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य करते हुए आपने आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर, आंध्र प्रदेश से वर्ष, 1977 में मेटिरियालॉजी में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की और फिर आपको मौसम विज्ञानी के रूप में जाना जाने लगा। आप वर्ष, 1992 तक असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट में एग्रोमेटिरियोलॉजी के प्रोफेसर रहे और वर्ष, 1989 में जोहन्नस गुटेनबर्ग यूनिवर्सिटी, मैंज, जर्मनी में क्लाइमैटोलॉजी के विजिटिंग प्रोफेसर रहे। आप 'क्लाइमेट एंड प्रोडक्टिविटी ऑव टी इन असम, इंडिया' संबंधी इंडो-जर्मन रिसर्च प्रोजेक्ट के वर्ष, 1989-1992 तक निदेशक भी रहे।

3. आपने साहित्य में अत्यधिक योगदान किया है। आपके प्रकाशनों की कुल संख्या 80 है। आपने असमी में 31 उपन्यास, लघु कहानियों के 27 संग्रह, 2 नाटक, 3 यात्रा वृतांत, 6 लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकें, एक बृहत आत्मकथा, 2 जैविक स्कैच लिखे हैं और पर्यावरण पर अंग्रेजी में एक पाठ्य पुस्तक लिखी है। राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट ने आपके एक उपन्यास का सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद करवा कर उसे प्रकाशित किया है और साहित्य अकादमी ने आपके पुरस्कार विजेता उपन्यास "पाताल भैरवी" को हिंदी, बंगाली, मैथिली और उडिया में प्रकाशित किया है। सरस्वती सम्मान पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'कायाकल्प' का अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध है। असम के महान वैष्णवी संतों की जीवनी पर आधारित आपके पांच उपन्यास सर्वाधिक बिकाऊ रहे हैं और इनमें से तीन उपन्यासों को उत्कृष्ट उपन्यास माना जाता है। आपके कुछ उपन्यासों और लघु कहानियों पर फिल्में और टी. वी. सीरियल बने हैं।

4. आपने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है जिनमें अध्यक्ष, असम साहित्य सभा, अध्यक्ष, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, असम, उपाध्यक्ष, असम विज्ञान सोसाइटी और संयोजक और कार्यपालक सदस्य, साहित्य अकादमी शामिल हैं। पत्रकारिता में आपका अनुभव भी कम नहीं है। आप इकॉनॉमिक टाइम्स के अपर असम संवाददाता दो दशकों तक फ्रीलांस पत्रकार, दो असमी साप्ताहिक पत्रिकाओं के संपादक और अब वर्ष, 2009 से गोरियोशी के संपादक हैं।

5. आपको कई साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, इनमें के. के. बिरला फाउंडेशन का सरस्वती सम्मान (2008), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1988), भारतीय भाषा परिषद का रचना समग्र पुरस्कार (2013), मेगर एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा समग्र योगदान के लिए असम वैली लिटरेरी पुरस्कार (2004), लाइफ टाइम अचीवमेंट के लिए असम प्रकाशन बोर्ड पुरस्कार (2012) और असम सरकार का माधवदेव पुरस्कार (2010) शामिल हैं।